आनंद विभाग के आ रहे सार्थक परिणाम 60 हजार से अधिक आनंदक पंजीकृत

» प्रदेशभर में 163 वॉलिंटियर कार्यरत

भास्कर ब्यूरो | भोपाल

भौतिक सूखों की चाहत और दूसरों से अपने आप की तुलना करने की इच्छा में इंसान अपने आपको इस कदर उलझा लेता है कि वह आनंद की अनुभूति से दूर हो जाता है। आज के युग में चाहे युवा हो, बुर्जुग, या नौजवान इनसे अछूते नहीं है। उनमें तनाव व डिप्रेशन पनप रहा है। इसी के मद्देनजर मप्र शासन ने आनंद संस्थान का गठन 2016 में किया था। राज्य का पूर्ण विकास नागरिकों की मानसिक, शारीरिक एवं भावनात्मक उन्नति तथा प्रसन्नता से ही संभव है। अतः नागरिकों को ऐसी विधियां तथा उपकरण उपलब्ध कराने होंगे, जो उनके लिए आनंद का कारक बनें।

आनंद संस्थान में अभी तक 60 हजार 220 आनंदक पंजीकृत है। प्रदेश के जिले में कुल इस समय 163 वॉलिंटियर कार्यरत है। जिन्हें सरकार की तरफ से विभाग कोई पारिश्रमिक व मानदेय नहीं देता हैं, लेकिन ये समाज में आनंद प्रदान करने का काम कर रहे हैं। यह वालेंटियर केवल समाज सेवियों के रूप में कार्य कर रहे है। आंनद संस्थान के सीईओ अखिलेश अर्गल ने बताया कि 170 स्थानों पर आनंद घर चल रहे हैं। प्रदेश में आनंद विभाग के अंतर्गत अल्पविराम, आनंद घर, आनंद कैलेंडर, आनंद शिविर जैसे गतिविधियां संचालित हैं। अर्गल ने बताया कि जीवन में भौतिक सुखों से ही केवल आनंद नहीं मिलता अपितु भौतिक सुखों से आगे बढ़कर आनंद के भाव को समझने से तथा उसके प्रयास करने से आनंद की अनुभुति होती है। उन्होंने अपने कई प्रसंग साझा करते हुए कहा कि एक महिला किसी बात से नाराज होकर अपने भाई से सालों से बात नहीं कर रहीं थी। लेकिन जब वे महिला आनंद संस्थान जुड़ी तब उन्हें एहसास हुआ कि वह जो कर रही थीं वह गलत है। जिसका उन्हें पछतावा हुआ तथा उन्होंने अपने भाई से राखी के दिन राखी बंधवाकर अपने गिले शिकवे दूर किए।

ऐसे बन सकते हैं आनंदक

अपने अन्य सामान्य कार्य कलापों के अतिरिक्त राज्य आनंद संस्थान की गतिविधियों को स्वप्रेरणा से तथा बिना किसी मानदेय के संचालन करने के लिये तैयार हो। अपने कर्तव्यों तथा विचारों से दूसरों के लिये सकारात्मक उदाहरण बनेंगे। अर्थात दूसरों के जीवन जीने की शैली में जो परिवर्तन लाने का प्रसास करेंगे उस परिवर्तन को पहले अपने जीवन में अनुभव करेंगे ताकि वह स्वतः उदाहरण बन सके। अन्य व्यक्तियों को भी आनंद गतिविधियों में भाग लेने के लिये प्रेरित करेंगे। पंजीकरण के दौरान आनंदक संचालित कार्यक्रम जैसे आनंद उत्सव/ आनंद सभा/ आंनदम में से किसी भी कार्यक्रम में सहभागिता का विकल्प चुन सकेंगे। पंजीकृत आनंदकों में से चयनित को कार्यक्रम में सहयोग प्रदान करने के लिये आवश्यक प्रशिक्षण दिया जावेगा। शेष आनंदक कार्यक्रम में सक्रिय भाग ले सकेंगे।